

70

जनवरी-जून, 2016

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

अनुक्रमणिका

अंग्रेजी का 'उत्तर-औपनिवेशिक' साम्राज्य एंग्लोफोन इकॉनॉमिस्टिक यूनिवर्सलिज़्म और भारत की अंग्रेजी-समस्या के लिये कुछ प्रस्ताव अभय कुमार दुबे	5
एक नये देश की तलाश का प्रस्ताव पंकज चतुर्वेदी	50
हिन्द स्वराज : सभ्यताओं का द्वंद्व राकेश मिश्र	59
अशोक वाजपेयी की कविता का जनतंत्र राजेन्द्र यादव	71
हरिशंकर परसाई का व्यंग्य अर्थात् आजाद भारत की सभ्यता समीक्षा विवेकानंद उपाध्याय	79
सुरेन्द्र चौधरी और प्रगतिशील आन्दोलन की कथा-आलोचना आशुतोष कुमार पाण्डेय	89
महर्षि पतंजलि के योग मनोविज्ञान की प्रासंगिकता श्यामल किशोर	95
गणित के क्षेत्र में भास्कराचार्य की देन बी.के. श्रीवास्तव	101
भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन और मध्यप्रदेश पर उसका प्रभाव (1885-1947 ई.) रचना मेहरा	109
जैन एवं बौद्ध भिक्षुणी संघ की सामाजिक मूल्यवत्ता राधवेन्द्र प्रताप सिंह	116
राममनोहर लोहिया का सामाजिक-राजनीतिक दर्शन चन्द्रशेखर नामदेव	122

गणित के क्षेत्र में भास्कराचार्य की देन

बी.के. श्रीवास्तव

वर्तमान में वैश्विक स्तर पर जो तकनीकी क्रांति हो रही है, उसमें भारतीय वैज्ञानिकों की अहम भूमिका है। नाम भले ही वैज्ञानिक आविष्कारों में यूरोप एवं अमेरिका का होता है, मगर उस आविष्कार की पृष्ठभूमि में कोई-न-कोई भारतीय मूल का वैज्ञानिक भी रहता है। यह भारतीय संस्कृति एवं विज्ञान का ही प्रताप है कि आज कतिपय बड़ी-बड़ी कम्पनियों के शीर्ष पर भारतीय मूल के व्यक्ति विराजमान हैं। सुदूर अतीत पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि इसवी पूर्व छठी शताब्दी में यूनानी विद्वान पाइथागोर (572-501 ई.पू.) ने ज्यामिती की नींव रखी और पाइथागोरस प्रमेय दिया। वास्तविक धरातल पर देखें तो पाइथागोर से कई वर्ष पहले ई.पू. 7वीं शताब्दी में भारतीय विद्वानों ने शुल्ब सूत्र की रचना की। इन शुल्ब सूत्रों में प्राचीन भारतीय ज्यामिती स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है। बोधायन एवं आपस्तम्ब भारत के प्राचीन ज्यामितीकार हैं। पाइथागोर के लगभग सौ वर्ष पहले उसके द्वारा प्रस्तुत प्रमेय की जानकारी प्राचीन भारतीय गणितज्ञ बोधायन को भली-भाँति थी। प्राचीन भारतीय यज्ञ वेदियाँ इसी आधार पर बनाई जाती थीं। बस हम इसे पेटेन्ट नहीं कर पाये, अन्यथा वैश्विक स्तर पर यह प्रमेय पाइथागोरस के स्थान पर बोधायन प्रमेय के नाम से जाना जाता।

अब भारत ने सबक सीख लिया है। वर्तमान में जीका वायरस 23 देशों में फैल चुका है। इससे पीड़ित व्यक्तियों में बुखार, बदन पर छाले, आँख आने, जोड़ों में दर्द जैसे लक्षण उभरते हैं। अभी भारत इस वायरस से बचा हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन इससे चिंतित है। हैदराबाद स्थित भारत बायोटेक इंटरनेशनल कंपनी के वैज्ञानिकों ने जीका वायरस के टीके का सर्वप्रथम आविष्कार कर लिया है। कम्पनी प्रमुख डॉ. कृष्णा एल्ला ने कहा है कि 'हम विश्व की पहली ऐसी दवा कम्पनी हैं जिसने जीका के टीके के पेटेंट के लिये 9 माह पहले ही आवेदन कर दिया है।' इस खोज पर इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च की डायरेक्टर जनरल डॉ. सौम्या स्वर्णानाथन ने कहा है कि यदि यह कामयाब रहा तो 'मेक इन इंडिया' का अच्छा उदाहरण सामने आयेगा।

गणित एवं ज्योतिष का ज्ञान भी विश्वस्तर पर सर्वप्रथम भारतीय गणितज्ञ आर्यभट्ट द्वारा दिया गया। आर्यभट्ट का जन्म 476 ई. में हुआ था। उनका सर्वप्रमुख एवं प्रथम ग्रन्थ आर्यभटीय है। आर्यभट्ट के बाद के एवं उनके समकालीन गणितज्ञ बराहमिहिर ने अपने प्रख्यात ग्रन्थ पंच सिद्धांतिका द्वारा भारतीय ज्योतिष एवं गणित के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण योगदान दिए। उनके बाद भारतीय गणित के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण योगदान दिए। उन्होंने